शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

सहारनपुर जनपद (उत्तर प्रदेश) में स्वातंत्रयोपरान्त कृषि विकास का सामाजिक, आर्थिक रूपान्तरण पर प्रभाव – एक भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 20.11.2021
स्वीकृतः 27.12.2021

डा० रामकुमार
ग्राम व पो० सादुल्लापुर लोदी, हापुड़
ईमेलः *jogram9927@gmail.com*

सारांश

भारत की गिनती विश्व के महत्वपूर्ण कृषि प्रधान देशों में की जाती है। इसकी अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत भूमि से उत्पादन है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की केन्द्र बिन्दू व भारतीय जीवन की धुरी है। आर्थिक जीवन का आधार रोजगार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन का माध्यम होने के कारण कृषि को देश की आधारशिला कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। देश की कुल श्रम शक्ति का लगभग 52 प्रतिशत भाग कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित क्षेत्रों से ही अपना जीविकोपार्जन कर रही है। अतः यह कहना समीचीन होगा कि कृषि के विकास, समृद्धि एवं उत्पादकता पर ही देश का विकास व सम्पन्नता निर्भर है। स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि को देश की आत्मा के रूप में स्वीकारते हुए एवं खेती को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए हैं देश के प्रथम प्रधानममंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट किया था कि ''सब कुछ इंतजार कर सकता है मगर खेती नहीं''। इसी तथ्य का अनुसरण करते हुए भारत सरकार कृषि क्षेत्र को विकसित करने एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने हेतु अनेक कार्यक्रमों, नीतियों व योजनाओं का संचालन कर रही है। सरकार ने वर्ष 1960–61 में भूमि सुधार कार्यक्रम का सूत्रपात किया। जिससे किसानों को भूमि का मालिकाना हक प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सरकार ने भू–स्रोतों की अधिकतम सीमा तथा चकबन्दी जैसे कार्यक्रमों को प्राथमिकता प्रदान की जिससे कृषक वर्ग लाभान्वित हो सकें। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश राज्य के सहारनपुर जनपद का चयन किया है। इसमें एक तिहाई से अधिक जनसंख्या का कृषि ही जीविर्कोपार्जन मुख्य साधन है। यहां की जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि तथा उससे सम्बन्धित क्रियाकलापों में संलग्न है। सहारनपुर जनपद में कृषि विकास का सामाजिक व आर्थिक रूपान्तरण पर प्रभाव के अध्ययन को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु इस दिशा में एक प्रयास किया है।

मुख्य बिन्दु

जनसंख्या, कृषि विकास, उत्पादकता, अर्थव्यवस्था, सामाजिक कारक, आर्थिक कारक।

अध्ययन क्षेत्र

सहारनपुर जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के 75 जनपदों में से एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है। सहारनपुर जनपद का आक्षांशीय विस्तार $29^0 83^0$ उत्तर से $30^0 25^0$ उत्तर एवं देशान्तरीय विस्तार $77^0 15^0$ पूर्व से $78^0 6^0$ पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 3689 वर्ग कि.मी. है अध्ययन क्षेत्र में 4 तहसीले, 11 विकासखण्ड हैं। जनपद की 2011 की जनसंख्या 3467332 है।

अध्ययन क्षेत्र का 2011 का जनसंख्या घनत्व 939 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. है। क्षेत्र की साक्षरता दर 70.55 प्रतिशत है।[1]

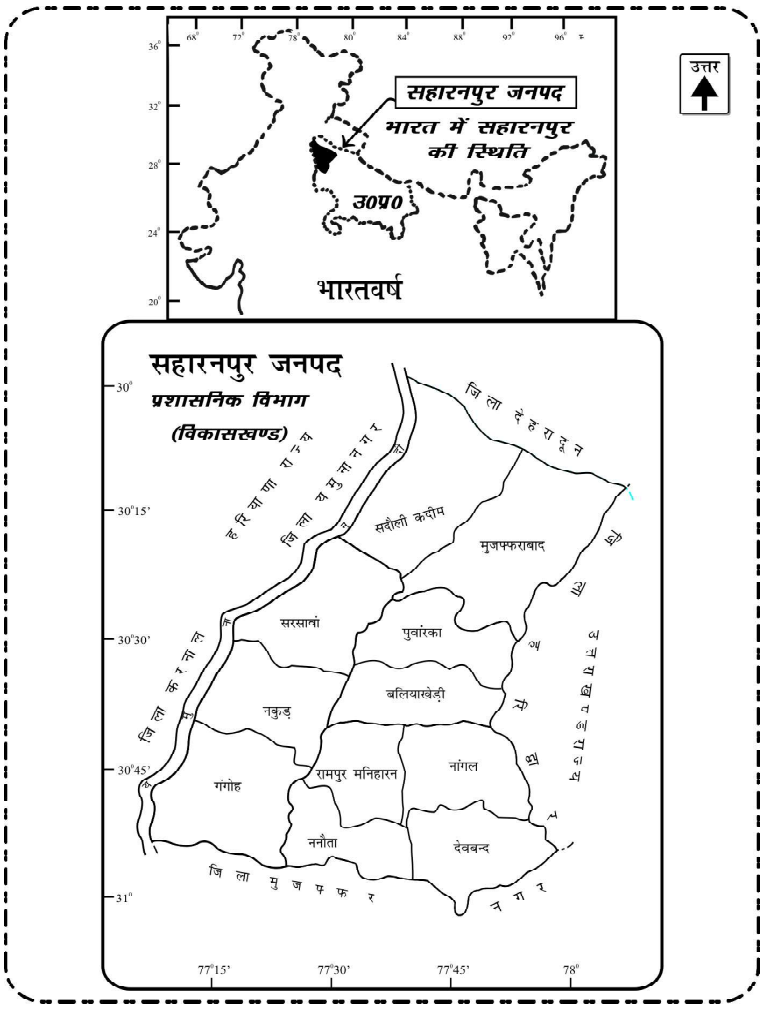

पूर्व साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

भारत वर्ष में कृषि विकास का यदि ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करें तो हम पाते है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् ही इस दिशा में संगठित प्रयास किये गये हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि एवं ग्रामीण विकास को प्राथमिकता दी गई। विश्व एवं हमारे देश में कृषि विकास के क्षेत्र में भूगोलवेताओं के कार्य का यदि मूल्यांकन करें तो प्राचीन काल से ही इस दिशा में प्रयास ब्रिटेन के प्रसिद्ध भूगोलवेता एल0डी0स्टाम्प[2] द्वारा किया गया जिन्होनें ब्रिटेन के भूमि उपयोग कि विवेचना की। इसके अतिरिक्त बाल्किन वर्ग[3], कोपेक[4] आदि विदेशी भूगोलवेताओं के कार्य

को इस दिशा में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय माना जा सकता है। भारतवर्ष में एस0पी0 चटर्जी[5] ने पं0 बंगाल के चौबीस परगना जिले की कृषि पर सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव की विवेचना की। इसके अतिरिक्त अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मौ. शफी[6] तथा राजवीर सिंह[7] आदि के विचार इस दिशा में उल्लेखनीय रहे है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रादेशिक एवं क्रमबद्ध दोनों विधियों का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है कि आंकड़े जनपद मुख्यालय के विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों तथा इण्टरनेट से प्राप्त किये गये हैं।

भौतिक स्वरूप

अध्ययन क्षेत्र सहारनपुर जनपद धरातलीय दृष्टि से यमुना मैदान की ही एक अंग है जो क्षेत्र में वहने वाली नदियों के नूतन निक्षेपों से निर्मित है। अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश क्षेत्र उपजाऊ नूतन जलोढ़ मिट्टियों से आच्छादित है जिन्हें अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तराई क्षेत्र की मिट्टियाँ दोमट मिट्टियाँ, बलुई एवं क्षारीय मिट्टियाँ की श्रेणी में रखा गया है। अपवाहतंत्र की दृष्टि से यमुना इस क्षेत्र की सतत् वाहिनी नदी है जोकि अपनी सहायक नदियों के साथ क्षेत्र में बहती है। अध्ययन क्षेत्र की जलवायु मृदु मानसूनी है जिसमें गर्मियों में तीव्र गर्मी और जाड़ो में अधिक ठन्ड पड़ती है। वर्षा की मात्रा सामान्य है ग्रीष्मकाल 30^0 से अधिक, जाड़ो में 5^0 से कम तथा वर्षा लगभग 100 से. मी. के आसपास होती है।[8]

जनसंख्या का स्वरूप

अध्ययन क्षेत्रा में वर्ष 1991 की जनसंख्या 1353636 थी, जोकि वर्ष 2011 में बढ़कर 3467332 हो गयी। इस मध्य जनसंख्या वृद्धि दर 256.14 प्रतिशत रही है। क्षेत्र की वर्ष 2001 की जनसंख्या 2896863 थी। अध्ययन क्षेत्र की 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या वृद्धि दर 19.6 प्रतिशत रही है।

भूमि उपयोग

सहारनपुर जनपद में कृषि यहाँ के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय है कृषि सम्बन्धी अध्ययनों में भूमि उपयोग अध्ययन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अध्ययन क्षेत्र के वर्तमान भूमि उपयोग पर यदि दृष्टिपात करें तों हम पाते है कि वर्ष 2017–18 में क्षेत्र का 73.85 प्रतिशत भाग कृषित है।[10] शेष कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 14.34 प्रतिशत है। वनों के अन्तर्गत 9.14 प्रतिशत क्षेत्र आच्छादित है। कृषित क्षेत्र का 46.64 प्रतिशत एक या एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र है।[11] भूमि उपयोग में तहसील एवं विकासखण्ड स्तर पर अत्यधिक असमानतायें है जोकि क्षेत्रों तथा स्थानिक स्तर पर कृषि को प्रभावित कर रही है।

फसल प्रतिरूप

कुल कृषित भूमि का 76.38 प्रतिशत खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत आता है। क्षेत्र में गेहूँ, गन्ना, चावल, प्रमुख फसलें है। इसके अतिरिक्त बाजरा, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन, चारा, आलू आदि भी छोटे क्षेत्र पर बोई जाती है शस्य प्रतिरूप में विकासखण्ड स्तर पर भी वैविध्य दर्शनीय है। अध्ययन क्षेत्र में शस्य श्रेणीकरण में गेहूँ प्रथम, गन्ना द्वितीय, चावल तृतीय तथा बाजरा चतुर्थ तथा मक्का पंचम क्रम की फसल है।

अध्ययन क्षेत्र में स्वातंत्रयोपरान्त हुए कृषि पर्यावरण में परिवर्तन में क्षेत्रीय स्तर पर अत्यधिक विभेद है। जिसके लिये भौतिक एवं सांस्कृतिक कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी है। क्षेत्र में कृषि विकास हेतु प्रयास यद्यपि विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में ही देखने को मिलते है। परन्तु इसका स्पष्ट प्रभाव हमें 1970 के बाद ही स्पष्ट देखने के मिला जबकि हरित क्रान्ति का नारा दिया गया। 1970 के बाद क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों के क्षेत्र में तथा उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है। क्षेत्र में कृषि विकास का जहाँ प्रभाव कृषि उत्पादन पर हुआ है। वहां विभिन्न फसलों के क्षेत्र में भी वृद्धि देखने को मिलती है। सहारनपुर जनपद में गेहूँ, गन्ना व चावल के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिलती है। इस अभिवृद्धि में कुछ क्षेत्रों में 20 प्रतिशत से अधिक और कुछ क्षेत्रों में 10 प्रतिशत से भी कम वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में अन्य फसलों के क्षेत्र मे अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई है, इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि कुछ फसलों का क्षेत्रफल घटा भी है।

सहारनपुर जनपद में कृषि विकास का प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि उत्पादकता पर पड़ा हैं। क्षेत्र में उत्पादन विकास के आँकड़े क्षेत्र के कृषि विकास की भिन्नता को स्पष्ट करते है क्षेत्र में चावल, गेहूँ, गन्ना, आलू, मसूर के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जबकि मोटे अनाजों का कुल उत्पादन क्रमशः घटा हैं।

विवेच्य क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है, कृषि यहां की आजीविका का प्रमुख साधन है। अतः कृषि विकास का प्रत्यक्ष प्रभाव यहां के जनजीवन पर प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। सहारनपुर जनपद के कृषि विकास का यहाँ के सामाजिक आर्थिक विकास पर स्पष्ट प्रभाव दर्शनीय है सहारनपुर जनपद के कृषि विकास के फलस्वरूप हुए आर्थिक विकास के मापन हेतु कृषि में तकनीकी रासायनिक कृष्याद्योगिक विकास तथा कृषि व्यावसायीकरण तथा यातायात तंत्र को आधार माना गया है उपर्युक्त मानकों के आधार पर यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जैसे–जैसे कृषि का तेजी से विकास हुआ है वैसे–वैसे क्षेत्र में आर्थिक विकास की गति भी तेज हुई है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के फलस्वरूप जहाँ तीव्र आर्थिक विकास हुआ है वही क्षेत्र में सामाजिक विकास भी स्पष्ट दिखाई देता है क्योंकि आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास दोनों ही एक दूसरे के पूरक एवं अन्योन्यन्नित है। क्षेत्र के सामाजिक विकास के मापन हेतु सामाजिक विकास के प्रमुख सूचक शिक्षा एवं उसके विभिन्न पहलू नगरीकरण की प्रवृत्ति स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं सामाजिक दृष्टिकोण को आधार माना है। उपर्युक्त मानकों के आधार पर क्षेत्र में तीव्र सामाजिक विकास दृष्टिगोचर होता हैं क्षेत्र में साक्षरता शिक्षा के स्तर नगरीकरण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम तथा सामाजिक दृष्टिकोण में तीव्र परिवर्तन दर्शनीय है।

अध्ययन क्षेत्र में जहाँ कृषि विकास के फलस्वरूप एक और हम सामाजिक एवं आर्थिक विकास की स्पष्ट झलक पाते है। वही इस सामाजिक, आर्थिक विकास में स्थानिक एवं क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्नतायें स्पष्ट दृष्टि गोचर होती है। इन सामाजिक, आर्थिक विभिन्नताओं के अन्यानेक प्राकृतिक एवं मानवीय कारक उत्तरदायी है।

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक तथ्यों मानवीय संसाधनों कृषि के विभिन्न पक्षों के विकास तदोपरान्त क्षेत्र में आर्थिक सामाजिक रूपान्तरण एवं सामाजिक आर्थिक विकास में क्षेत्रीय विभिन्नताओं के विषद अध्ययन के उपरान्त क्षेत्र के सन्तुलित समाजिक आर्थिक विकास हेतु निम्न सुझावों पर ध्यान देना परम आवश्यक है।

सहारनपुर जनपद जहाँ एक ओर प्राकृतिक संसाधनों में सन्तोषजनक स्थित में वही क्षेत्र में अपने क्षेत्र की भांति ही जनसंख्या वृद्धि की दर अत्यधिक है। परिणाम कृषि पर जनसंख्या का भार निरन्तर बढ़ रहा है इसे रोका जाना चाहियें। इसके अतिरिक्त जनसंख्या के अन्य पक्षों में भी अनेक विषमतायें है। इन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे साक्षरता की कम दर साक्षरता में स्त्री एवं पुरूषों में अत्यधिक भेद तथा ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की वृद्धि में विभेद आदि जनसंख्या के साथ–साथ ही क्षेत्र की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है इस हेतु विस्तृत भूमि उपयोग योजना बनाने की आवश्यकता है साथ ही क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर फसलों का उत्पादन साथ ही उद्योगों की आवश्यकता हेतु कच्चा माल पैदा करने वाली फसलें को बढ़ावा देना चाहिये क्षेत्र में कृषि के उत्पादन बढ़ाने हेतु लघुस्तरीय कृषि योजनायें बनाकर उन्हें लागूकर उत्पादन बढ़ाने के प्रयास करने चाहिये कृषि विकास का अन्तिम लक्ष्य कृषि से अधिकाधिक कृषि उत्पादन प्राप्त करना है। इस हेतु कृषित क्षेत्र सिंचित क्षेत्र सिंचन सुविधाओं में परिवर्तन मिट्टी के अनुकूलतम उपयोग अच्छे खाद बीज कृषि यंत्रों का प्रयोग कर तथा फसल चक्र में सुधार कर उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

कृषि फसलों के उत्पादन से ही हम कृषि विकास नहीं कर सकते जब तक कि हमें उन फसलों का उचित मूल्य हमें प्राप्त न हो। इस हेतु विपणन व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाना होगा साथ ही इस विपणन व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु यातायात एवं संचार के साधनों का समुचित विकास करना होगा।

क्षेत्र की कृषि व्यवस्था पर बढ़ते जनसंख्या भार को कम करने और क्षेत्र की तीव्र उन्नति के लिये क्षेत्र में कृष्याधारित उद्योगों का विकास करना होगा। औद्योगिक उन्नति के बिना कृषि और कृषि के बिना औद्योगिक विकास असम्भव है। अतः दोनों पक्षो का संतुलित विकास आवश्यक है।

क्षेत्र में व्यापक प्राकृतिक संसाधनों के बाद भी जन जीवन में गरीबी वर्ग संघर्ष असंतोष पीड़ा एवं क्षेत्रीय तथा अन्य आर्थिक विषमतायें वस्तुतः मानवकृत है। इनका मुख्य कारण एक और तो प्राकृतिक संसाधनों का मानव कल्याणार्थ अधिक से अधिक वैज्ञानिक विकास होता चले इससे मानव जीवन के हर क्षेत्र में समन्वित विकास होगा। क्षेत्र में सभी प्रकार के सामाजिक आर्थिक सुधारों को लागू करके साथ ही कृषि उत्पादकता में वृद्धि करके विकास का उचित वातावरण तैयार किया जा सकता है अन्त में कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र हेतु सुझाये गये उपायों एवं कार्यक्रमों को यदि ठीक प्रकार से लागू किया जाए तो क्षेत्र का समन्वित विकास हो सकेगा।

सन्दर्भ

1. सांख्यिकीय पत्रिका जनपद सहारनपुर, 2019. तालिका 1,7 व 15 से संकलित।
2- Stamp. L.D. (1962) : "Land of Britain its use and misuse", London 1.
3. Valken Burg, S.V. (1949) : "The Project Forward Before the International Geographical Union at Lirbon.
4. Coppock, J.T. (1971) : "An Agricultural Geography of Great Britain", London, `Page 34.
5. Chaterjee, S.P. (1945) : "Land use survey in India".
6. Shafi, M. (1951) : "A plea for land use survey, Geographer".

7. Singh, Rajveer (2008) : Agriculture Development and Socio Economic Transformation in Saharanpur District- An Unpublished Thesis M.J.P.R.U. Bareilly.
8. वर्मा, श्रीराम एवं वशिष्ट, आत्माराम : 'आदर्श एटलस', जिला सहारनपुर, नवभारत प्रकाशन मंदिर, सहारनपुर, पृ.–1–8
9. भारत की जनगणना 2011 एवं सांख्यिकीय पत्रिका जनपद सहारनपुर, 2019 तालिका–9
10. सांख्यिकीय पत्रिका जनपद सहारनपुर, 2019 तालिका–17 से संकलित।
11. सांख्यिकीय पत्रिका जनपद सहारनपुर, 2019 तालिका–17 से संकलित।
12 सांख्यिकीय पत्रिका जनपद सहारनपुर, 2019 तालिका–17 व 19 से संकलित।